



ANJAY GOUTAM

07 Nov 2016

11:57 AM

Jabalpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 120560601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 07/11/2016
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 11:57:00 घंटे
इष्ट _____: 14:04:22 घटी
स्थान _____: Jabalpur
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 79:57:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:10:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:46:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:21 घंटे
साम्पातिक काल _____: 14:54:22 घंटे
सूर्योदय _____: 06:19:15 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:28:32 घंटे
दिनमान _____: 11:09:17 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 21:11:17 तुला
लग्न के अंश _____: 08:28:01 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: मकर - शनि
नक्षत्र-चरण _____: श्रवण - 2
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: गण्ड
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: वानर
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: खू-खूबचन्द
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1938	कार्तिक	16
पंजाबी	संवत : 2073	कार्तिक	23
बंगाली	सन् : 1423	कार्तिक	21
तमिल	संवत : 2073	आइपसी	22
केरल	कोल्लम : 1192	तुलम	22
नेपाली	संवत : 2073	कार्तिक	22
चैत्रादि	संवत : 2073	कार्तिक	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2073	कार्तिक	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
 तिथि समाप्ति काल _____ : 13:09:51
 जन्म तिथि _____ : 7
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : श्रवण
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 28:17:29 घंटे
 जन्म योग _____ : श्रवण
 सूर्योदय कालीन योग _____ : गण्ड
 योग समाप्ति काल _____ : 25:04:05 घंटे
 जन्म योग _____ : गण्ड
 सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
 करण समाप्ति काल _____ : 13:09:51 घंटे
 जन्म करण _____ : वणिज
 भयात _____ : 21:46:50
 भभोग _____ : 62:38:01
 भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 6 वर्ष 6 मा 19 दि

घात चक्र

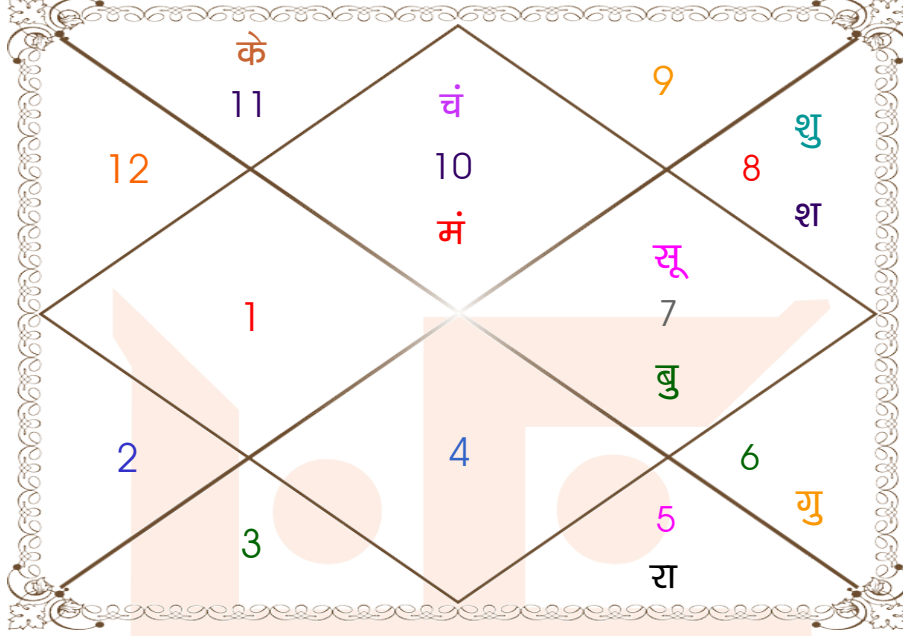
मास _____ : वैशाख
 तिथि _____ : 4-9-14
 दिन _____ : मंगलवार
 नक्षत्र _____ : रोहिणी
 योग _____ : वैधृति
 करण _____ : शकुनि
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : मूषक
 लग्न _____ : कुम्भ
 सूर्य _____ : कुम्भ
 चन्द्र _____ : सिंह
 मंगल _____ : मीन
 बुध _____ : धनु
 गुरु _____ : मेष
 शुक्र _____ : वृष
 शनि _____ : मकर
 राहु _____ : मिथुन

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

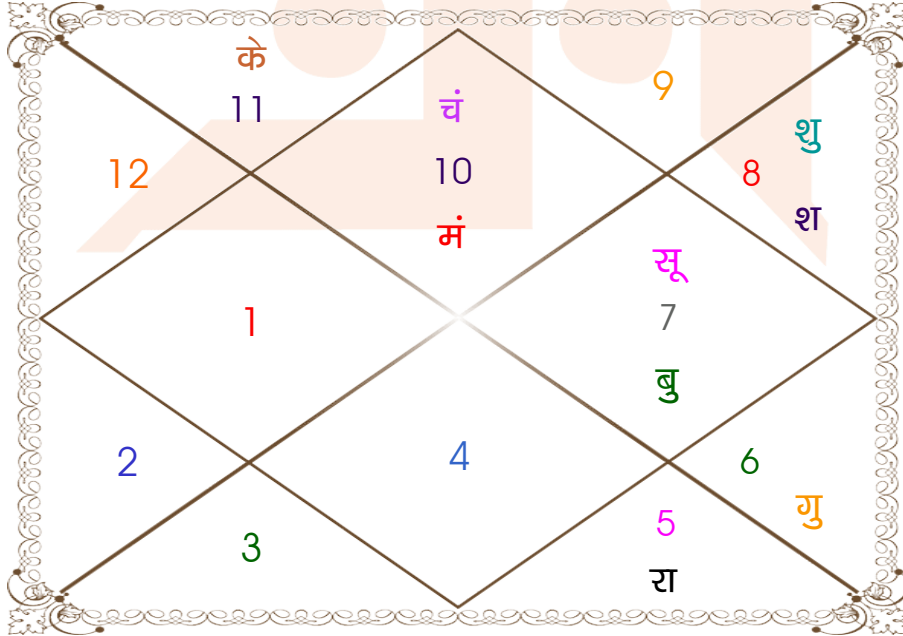
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
 9827998836, 9425878602
 astrosandeep90@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के			
मं ल चं			रा
	श शु	बु सू	गु

लग्न कुंडली

			के
		मं ल चं	
रा	गु	सू बु	शु श

विंशोत्तरी
चन्द्र 6वर्ष 6मा 19दि
चन्द्र

07/11/2016

29/05/2133

चन्द्र	29/05/2023
मंगल	28/05/2030
राहु	28/05/2048
गुरु	28/05/2064
शनि	29/05/2083
बुध	29/05/2100
केतु	30/05/2107
शुक्र	30/05/2127
सूर्य	29/05/2133

योगिनी
मंगला 0वर्ष 7मा 26दि
भामरी

05/07/2022

05/07/2026

भामरी	14/12/2022
भद्रिका	05/07/2023
उल्का	04/03/2024
सिद्धा	13/12/2024
संकटा	03/11/2025
मंगला	14/12/2025
पिंगला	05/03/2026
धान्या	05/07/2026

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

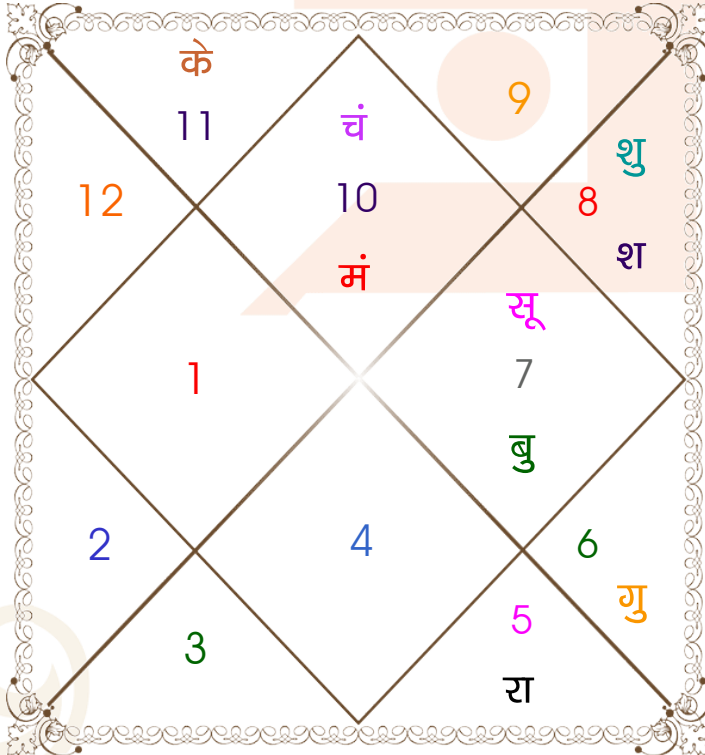
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	08:28:01	391:36:47	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
सूर्य			तुला	21:11:17	01:00:13	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	नीच राशि
चंद्र			मक	14:35:42	12:42:59	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	सम राशि
मंगल			मक	04:27:49	00:43:51	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	उच्च राशि
बुध	अ		तुला	27:36:24	01:34:11	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
गुरु			कन्या	18:21:25	00:11:52	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			वृश्चि	29:59:56	01:11:59	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	सम राशि
शनि			वृश्चि	20:57:24	00:06:28	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		सिंह	16:08:00	00:00:34	पूर्वाषाढ़ा	1	11	सूर्य	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	16:08:00	00:00:34	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		मीन	27:31:17	00:02:10	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	---
नेप	व		कुंभ	15:11:52	00:00:26	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	---
प्लूटो			धनु	21:16:06	00:01:13	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			तुला	21:58:10	--	विशाखा	--	16	शुक्र	गुरु	शनि	--

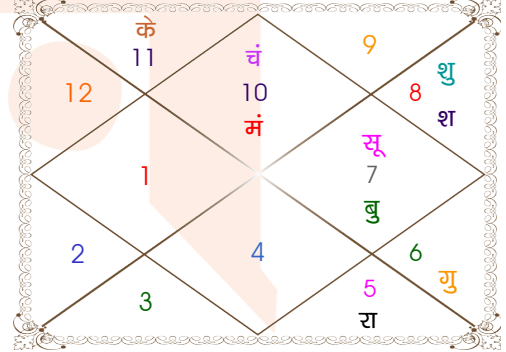
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:05:25

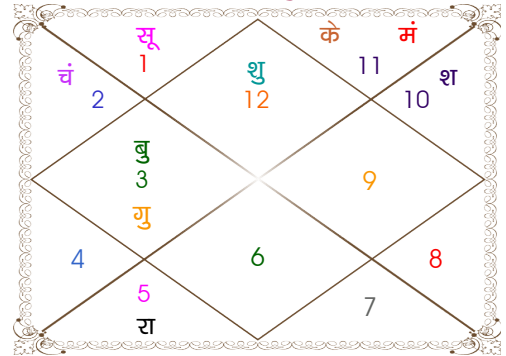
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश

9827998836, 9425878602

astrosandeep90@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 25:43:02	मकर 08:28:01
2	मकर 25:43:02	कुम्भ 12:58:04
3	मीन 00:13:06	मीन 17:28:07
4	मेष 04:43:09	मेष 21:58:10
5	वृष 04:43:09	वृष 17:28:07
6	मिथुन 00:13:06	मिथुन 12:58:04
7	मिथुन 25:43:02	कर्क 08:28:01
8	कर्क 25:43:02	सिंह 12:58:04
9	कन्या 00:13:06	कन्या 17:28:07
10	तुला 04:43:09	तुला 21:58:10
11	वृश्चिक 04:43:09	वृश्चिक 17:28:07
12	धनु 00:13:06	धनु 12:58:04

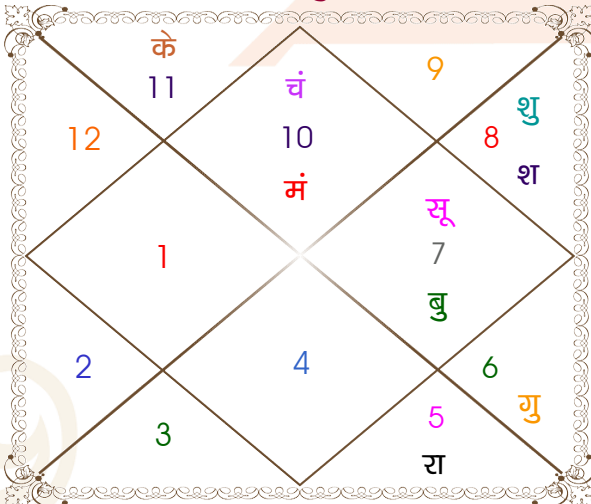
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर 08:28:01	
2	कुम्भ 15:41:01	
3	मीन 21:37:48	
4	मेष 21:58:10	
5	वृष 17:40:07	
6	मिथुन 11:53:17	
7	कर्क 08:28:01	
8	सिंह 15:41:01	
9	कन्या 21:37:48	
10	तुला 21:58:10	
11	वृश्चिक 17:40:07	
12	धनु 11:53:17	

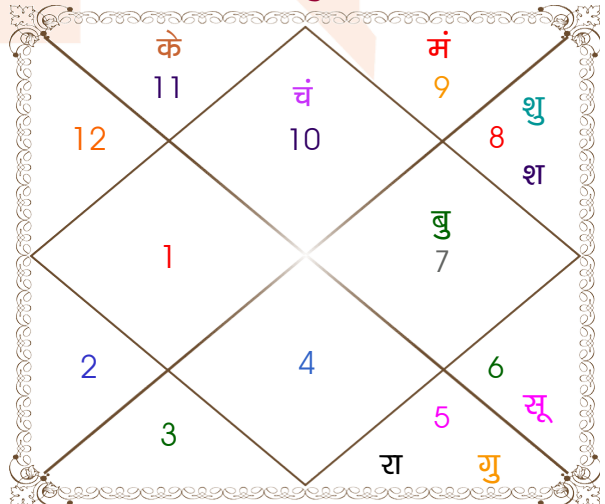
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 6 मास 19 दिन

चंद्र 10 वर्ष 07/11/2016 29/05/2023	मंगल 7 वर्ष 29/05/2023 28/05/2030	राहु 18 वर्ष 28/05/2030 28/05/2048	गुरु 16 वर्ष 28/05/2048 28/05/2064	शनि 19 वर्ष 28/05/2064 29/05/2083
00/00/0000	मंगल 25/10/2023	राहु 08/02/2033	गुरु 16/07/2050	शनि 01/06/2067
00/00/0000	राहु 11/11/2024	गुरु 04/07/2035	शनि 26/01/2053	बुध 08/02/2070
07/11/2016	गुरु 18/10/2025	शनि 10/05/2038	बुध 04/05/2055	केतु 20/03/2071
गुरु 28/08/2017	शनि 27/11/2026	बुध 27/11/2040	केतु 09/04/2056	शुक्र 19/05/2074
शनि 29/03/2019	बुध 24/11/2027	केतु 15/12/2041	शुक्र 09/12/2058	सूर्य 01/05/2075
बुध 27/08/2020	केतु 21/04/2028	शुक्र 15/12/2044	सूर्य 27/09/2059	चंद्र 30/11/2076
केतु 28/03/2021	शुक्र 22/06/2029	सूर्य 09/11/2045	चंद्र 26/01/2061	मंगल 08/01/2078
शुक्र 27/11/2022	सूर्य 27/10/2029	चंद्र 10/05/2047	मंगल 02/01/2062	राहु 14/11/2080
सूर्य 29/05/2023	चंद्र 28/05/2030	मंगल 28/05/2048	राहु 28/05/2064	गुरु 29/05/2083

बुध 17 वर्ष 29/05/2083 29/05/2100	केतु 7 वर्ष 29/05/2100 30/05/2107	शुक्र 20 वर्ष 30/05/2107 30/05/2127	सूर्य 6 वर्ष 30/05/2127 29/05/2133	चंद्र 10 वर्ष 29/05/2133 00/00/0000
बुध 24/10/2085	केतु 25/10/2100	शुक्र 28/09/2110	सूर्य 16/09/2127	चंद्र 30/03/2134
केतु 22/10/2086	शुक्र 25/12/2101	सूर्य 28/09/2111	चंद्र 17/03/2128	मंगल 29/10/2134
शुक्र 21/08/2089	सूर्य 02/05/2102	चंद्र 29/05/2113	मंगल 23/07/2128	राहु 29/04/2136
सूर्य 28/06/2090	चंद्र 01/12/2102	मंगल 29/07/2114	राहु 16/06/2129	गुरु 08/11/2136
चंद्र 27/11/2091	मंगल 29/04/2103	राहु 29/07/2117	गुरु 05/04/2130	00/00/0000
मंगल 24/11/2092	राहु 17/05/2104	गुरु 29/03/2120	शनि 18/03/2131	00/00/0000
राहु 13/06/2095	गुरु 23/04/2105	शनि 30/05/2123	बुध 22/01/2132	00/00/0000
गुरु 18/09/2097	शनि 02/06/2106	बुध 30/03/2126	केतु 29/05/2132	00/00/0000
शनि 29/05/2100	बुध 30/05/2107	केतु 30/05/2127	शुक्र 29/05/2133	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 6 वर्ष 6 मा 8 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि 18/10/2025 27/11/2026	मंगल - बुध 27/11/2026 24/11/2027	मंगल - केतु 24/11/2027 21/04/2028	मंगल - शुक्र 21/04/2028 22/06/2029	मंगल - सूर्य 22/06/2029 27/10/2029
शनि 21/12/2025 बुध 17/02/2026 केतु 12/03/2026 शुक्र 19/05/2026 सूर्य 08/06/2026 चंद्र 12/07/2026 मंगल 04/08/2026 राहु 04/10/2026 गुरु 27/11/2026	बुध 17/01/2027 केतु 08/02/2027 शुक्र 09/04/2027 सूर्य 27/04/2027 चंद्र 27/05/2027 मंगल 17/06/2027 राहु 11/08/2027 गुरु 28/09/2027 शनि 24/11/2027	केतु 03/12/2027 शुक्र 28/12/2027 सूर्य 04/01/2028 चंद्र 17/01/2028 मंगल 25/01/2028 राहु 17/02/2028 गुरु 08/03/2028 शनि 31/03/2028 बुध 21/04/2028	शुक्र 01/07/2028 सूर्य 23/07/2028 चंद्र 27/08/2028 मंगल 21/09/2028 राहु 24/11/2028 गुरु 20/01/2029 शनि 28/03/2029 बुध 28/05/2029 केतु 22/06/2029	सूर्य 28/06/2029 चंद्र 09/07/2029 मंगल 16/07/2029 राहु 04/08/2029 गुरु 21/08/2029 शनि 11/09/2029 बुध 29/09/2029 केतु 06/10/2029 शुक्र 27/10/2029
मंगल - चंद्र 27/10/2029 28/05/2030	राहु - राहु 28/05/2030 08/02/2033	राहु - गुरु 08/02/2033 04/07/2035	राहु - शनि 04/07/2035 10/05/2038	राहु - बुध 10/05/2038 27/11/2040
चंद्र 14/11/2029 मंगल 27/11/2029 राहु 29/12/2029 गुरु 26/01/2030 शनि 01/03/2030 बुध 31/03/2030 केतु 12/04/2030 शुक्र 18/05/2030 सूर्य 28/05/2030	राहु 23/10/2030 गुरु 04/03/2031 शनि 07/08/2031 बुध 25/12/2031 केतु 20/02/2032 शुक्र 03/08/2032 सूर्य 21/09/2032 चंद्र 12/12/2032 मंगल 08/02/2033	गुरु 05/06/2033 शनि 21/10/2033 बुध 23/02/2034 केतु 15/04/2034 शुक्र 08/09/2034 सूर्य 22/10/2034 चंद्र 03/01/2035 मंगल 23/02/2035 राहु 04/07/2035	शनि 16/12/2035 बुध 12/05/2036 केतु 11/07/2036 शुक्र 01/01/2037 सूर्य 22/02/2037 चंद्र 20/05/2037 मंगल 19/07/2037 राहु 22/12/2037 गुरु 10/05/2038	बुध 19/09/2038 केतु 12/11/2038 शुक्र 17/04/2039 सूर्य 02/06/2039 चंद्र 19/08/2039 मंगल 12/10/2039 राहु 29/02/2040 गुरु 02/07/2040 शनि 27/11/2040
राहु - केतु 27/11/2040 15/12/2041	राहु - शुक्र 15/12/2041 15/12/2044	राहु - सूर्य 15/12/2044 09/11/2045	राहु - चंद्र 09/11/2045 10/05/2047	राहु - मंगल 10/05/2047 28/05/2048
केतु 19/12/2040 शुक्र 21/02/2041 सूर्य 12/03/2041 चंद्र 13/04/2041 मंगल 05/05/2041 राहु 02/07/2041 गुरु 22/08/2041 शनि 22/10/2041 बुध 15/12/2041	शुक्र 16/06/2042 सूर्य 10/08/2042 चंद्र 09/11/2042 मंगल 12/01/2043 राहु 25/06/2043 गुरु 18/11/2043 शनि 10/05/2044 बुध 12/10/2044 केतु 15/12/2044	सूर्य 31/12/2044 चंद्र 28/01/2045 मंगल 16/02/2045 राहु 06/04/2045 गुरु 20/05/2045 शनि 11/07/2045 बुध 27/08/2045 केतु 15/09/2045 शुक्र 09/11/2045	चंद्र 24/12/2045 मंगल 25/01/2046 राहु 17/04/2046 गुरु 29/06/2046 शनि 24/09/2046 बुध 11/12/2046 केतु 12/01/2047 शुक्र 13/04/2047 सूर्य 10/05/2047	मंगल 02/06/2047 राहु 29/07/2047 गुरु 18/09/2047 शनि 18/11/2047 बुध 12/01/2048 केतु 03/02/2048 शुक्र 07/04/2048 सूर्य 26/04/2048 चंद्र 28/05/2048

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	9
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

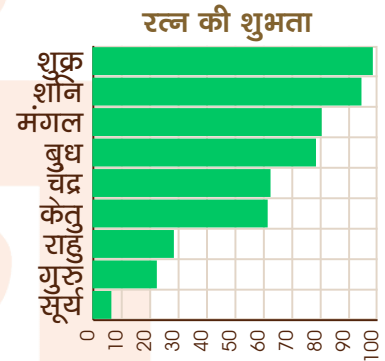
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	98%	धनार्जन, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	94%	धनार्जन, स्वास्थ्य, धन
मूंगा	मंगल	80%	स्वास्थ्य, सुख, धनार्जन
पन्ना	बुध	78%	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मोती	चंद्र	62%	स्वास्थ्य, दम्पति
लहसुनिया	केतु	61%	धन, धनार्जन
गोमेद	राहु	28%	दुर्घटना, व्यावसायिक हानि
पुखराज	गुरु	22%	नेष्ट भाग्य, व्यय, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	6%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	29/05/2023	19%	75%	80%	84%	22%	98%	94%	3%	47%
मंगल	28/05/2030	19%	69%	92%	66%	34%	98%	94%	3%	67%
राहु	28/05/2048	0%	50%	67%	78%	22%	100%	100%	52%	47%
गुरु	28/05/2064	19%	69%	86%	66%	47%	86%	94%	28%	61%
शनि	29/05/2083	0%	50%	67%	84%	22%	100%	100%	41%	47%
बुध	29/05/2100	19%	50%	80%	91%	22%	100%	94%	28%	61%
केतु	30/05/2107	0%	50%	86%	78%	22%	100%	81%	3%	73%
शुक्र	30/05/2127	0%	50%	80%	84%	22%	100%	100%	41%	67%
सूर्य	29/05/2133	31%	69%	86%	78%	34%	86%	81%	3%	47%

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
शुभ
शुभ
अशुभ
अशुभ

क्षेत्र

कम खर्च
स्वास्थ्य
धन
सुख हानि
दुर्घटना

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित हो जाता है। नौकरी में थोड़ा बहुत रुकावट आती है या कभी पदावनति होने का भय होता है। प्रायः जातक को पैतृक सम्पत्ति का मनोवांछित लाभ नहीं मिलता है। व्यापारादि कार्यों में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और विशेष परिश्रम करने के बावजूद भी उसका सही फल प्राप्त नहीं होता है। कामों में स्थिरता प्रायः नहीं आ पाती।

इस योग के प्रभाव से जातक अपने मित्रों के द्वारा कभी थोड़ा बहुत छले जाते हैं। जिस कारण जातक को नुकसान उठाना पड़ता है। कभी जातक के शरीर में रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है तथा आंशिक रूप में मानसिक परेशानी घेरे रहती है। जातक को कुटुम्ब से अपयश मिलता है एवं आत्मीय परिजनों से सम्मान नहीं मिलता है।

इस योग के कारण जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता एवं वाणी कभी-कभी दूषित हो जाती है। परिणामस्वरूप जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। बात-बात पर लड़ाई-झगड़े करने को भी तैयार हो जाता है और जातक को आंशिक रूप से आर्थिक नुकसान होता है तथा उधार में दिया हुआ पैसा प्रायः डूब ही जाता है। जातक को कभी शस्त्राघात का भय होता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे षड्यन्त्र रचते रहते हैं, परन्तु अपने षड्यन्त्र में वे कभी सफल नहीं होते। जातक को अकाल मृत्यु का भय बना रहता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश

9827998836, 9425878602

astrosandeep90@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी,

वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शुक हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मि, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरध्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(29/05/2023 - 28/05/2030)

मंगल की महादशा 29/05/2023 को आरम्भ तथा 28/05/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल प्रथम भाव में अवस्थित है। अतः यह दशा आपके लिये भाग्यशाली और उत्तम होगी। इसके पूर्व आपकी 10 वर्षों की चन्द्रदशा चल रही थी। आप को माता से लाभ और सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति होगी। इस दशा में आपको शुभ फल मिलते रहेंगे। आपको यश, प्रतिष्ठा, उत्तम स्वास्थ्य तथा कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको ऊर्जा तथा जीवन शक्ति की प्राप्ति होगी। आप अपने सारे कार्यों का पूरे उत्साह से सम्पादन करेंगे। इस दशा के दौरान आप आत्मविश्वासी और हठधर्मी होंगे और अपनी प्रशासनिक क्षमता का प्रदर्शन करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के कारण आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सम्मान करना पड़ सकता है। आप सरदर्द, हृदय-रोग या पित्त-दोष से पीड़ित हो सकते हैं।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि आप प्रशासनिक सेवा में हैं तो इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। आप सुखियों में रहेंगे और आपको यश और प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी। व्यवसाय तथा व्यापार में लाभ में वृद्धि होगी। आपको अप्रत्याशित धन की प्राप्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानांतरण या परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। मुकदमें में विजय होगी। आप सैन्य सेवा, अभियन्त्रण, शल्य चिकित्सा या लौह-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध व्यवसाय का चयन अपनी जीविका के लिये कर सकते हैं। आप योजना-कार्य या प्रशासनिक कार्यों का सम्पादन अति सुन्दर ढंग से कर सकते हैं। आप रसायन, सामुद्री उत्पाद, कुटीर-उद्योग आदि से संबंधित व्यापार कर सकते हैं। आप एक सफल दन्त चिकित्सक या शल्य चिकित्सक हो सकते हैं। आप तकनीकी अथवा कृषि से सम्बद्ध कार्यों में सफल होंगे।

सम्पत्ति, वाहन, यात्राएं :

आप न केवल स्वयं धन अर्जित करेंगे बल्कि आपको विरासत की भू-सम्पत्ति भी मिलेगी। अचानक अप्रत्याशित स्रोतों से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। पैतृक सम्पत्ति, दाय, सेवा-निवृत्ति से लाभ, बोनस, ग्रेच्युइटी आदि की प्राप्ति हो सकती हैं जो लाभदायक होंगी। साझेदारों या पैतृक सम्पत्ति से लाभ भी हो सकते हैं। इस दशा में आप अपने मकान का निर्माण कर सकते हैं या आपको किसी मकान की प्राप्ति हो सकती है।

शिक्षा :

इस अवधि में आप की शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रगति करेंगे। आपको छात्रवृत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं, वाद-विवादों और अन्य प्रतिस्पर्धाओं में

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

सफल होंगे। दृढ़ और आत्मविश्वासी होंगे तथा नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। खेलों, विज्ञान तथा तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। आप एक गम्भीर छात्र होंगे-हमेशा सक्रिय, सावधान और प्रतियोगी। आप नेतृत्व करेंगे किन्तु किसी का अनुसरण नहीं करेंगे।

परिवार :

आपको परिवार से सुख मिलेगा। जीवन साथी के साथ सम्बन्धों में कभी-कभी तनाव हो सकता है। आपको हठधर्मिता का परित्याग करना चाहिए और परिवार में अच्छे सम्बन्ध बनाए रखना चाहिए। आपके बच्चों के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनके साथ आपके संबंध मुधुर होंगे। उनके भाग्य की उन्नति होगी और वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और आप सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहेंगे। आपकी माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। उनका स्वास्थ्य थोड़ा प्रभावित होगा। आपके पिता को धन, समृद्धि, लाभ, यश, ख्याति आदि की प्राप्ति होगी। आपको उनके साथ मधुर संबंध रखना चाहिए। आप को उनसे लाभ मिल सकता है। आपके छोटे भाई-बहन भाग्यशाली होंगे और उन्हें धन की प्राप्ति होगी तथा आपके बड़े भाई-बहनों को प्रगति करने के लिए एक कठिन परिश्रम करना होगा और वे अपने कार्यों में सफल होंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध अच्छे होंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की अन्तर्दशा आरम्भ से ही लाभदायक होगी। आपके घर में शुभ कार्य होंगे, आपको बच्चों से खुशी मिलेगी तथा आपकी शक्ति व पराक्रम में वृद्धि होगी। राहु की अन्तर्दशा अशुभ हो सकती है और स्वास्थ्य-समस्याओं तथा आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। गुरु की अन्तर दशा में आपको बच्चों तथा बड़ों से सुख तथा तीर्थाटन के अवसर की प्राप्ति होगी और आध्यात्मिक कार्यों में आपकी रुचि होगी। दशम तथा एकादश भाव के स्वामी की अन्तर्दशा आपको व्यावसायिक सफलता तथा लाभ प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी शक्ति में कमी आएगी, असफल छोटी यात्राएँ होंगी और भाई-बहनों से कष्ट मिलेगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण मानसिक समस्याओं और तनाव से सामना होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको मानसिक तनाव होगा तथा पारिवारिक जीवन में संकट का सामना करना पड़ेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपके लिये समृद्धिशाली सिद्ध होगी और इस दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी और आप भाग्यशाली होंगे। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण आपको माता से लाभ होगा और भूमि और वाहन की प्राप्ति होगी।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(11/11/2024 - 18/10/2025)**

आपकी मंगल की महादशा 29/05/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 11/11/2024 को प्रारंभ होकर 18/10/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और प्रसिद्ध होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। मष्तिष्क का उत्थान होगा और प्रगति के अवसर आएंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। शिशु का जन्म हो सकता है। शिक्षण, लेखन और प्रकाशन के लिए समय उत्तम है। समस्याएं सुलझेंगी; शांति बहाल होगी। परीक्षा में सफलता मिलेगी। वेद, तंत्र मंत्र आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी के परिवार से मधुर संबंध रहेंगे। आपके पिता प्रगति करेंगे, स्वास्थ्य और आर्थिक स्तर उत्तम होंगे। आपके भाई-बहनों का विवाह हो सकता है, अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं, आय में वृद्धि होगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित तबादला हो सकता है; साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं। व्यापारियों को अधिक परिश्रम करना होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। शरीर के निचले अंगों में कोई व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की अराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(18/10/2025 - 27/11/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 29/05/2023 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 18/10/2025 को प्रारंभ होकर 27/11/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको हर प्रकार से लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। धन, ज्ञान और सम्मान का संकेत है। साख उत्तम रहेगी। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। संतान से सुख मिलेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। कर्मठता, धैर्य और कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। कुछ धन आसानी से मिल जाएगा।

आपके जीवनसाथी को पहले किये निवेश से आय होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं होंगी; उत्साह उच्चस्तर का रहेगा। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं; आय अच्छी होगी। आपके भाई-बहनों की यात्रा हो सकती है; उच्च शिक्षा, भौतिक सुख, आत्मविश्वास में वृद्धि और कार्यों में सफलता का संकेत है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

आपकी संतान सामूहिक गतिविधियों में भाग लेगी, उन्हें विरोधियों पर सफलता मिलेगी, प्रसन्न और उत्साही होंगे। अगर से सेवारत हैं तो कार्यों में सफल होंगे, चुनाव में जीत सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों और घुटनों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए पांचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(27/11/2026 - 24/11/2027)**

आपके लिए मंगल की महादशा 29/05/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 27/11/2026 को प्रारंभ होकर 24/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में बहुत उन्नति करेंगे। विज्ञान, संचार माध्यम और व्यापार में लाभ होगा। उच्चाधिकारी आपके कार्य की प्रशंसा करेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी। घरेलू सुख रहेगा। अचल संपत्ति मिल सकती है, निवास सुविधाजनक होगा। पराविद्या में रुचि होगी। बहुत से मित्र होंगे, समाज में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को सब सुख उपलब्ध रहेंगे। पिता धन कमाएंगे; घर पर सुविधाएं रहेंगी, साहित्य से जुड़ सकते हैं। माता को भागीदारी में लाभ होगा। यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी; शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता खूब उन्नति करेंगे। व्यापारियों को निवेश करना पड़ सकता है।

स्नायुतंत्र और त्वचा के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(24/11/2027 - 21/04/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 29/05/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/11/2027 को प्रारंभ होकर 21/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

इस अवधि में आप धन कमाएंगे। परिवार से संबंध मधुर रहेंगे। खुशियां मिलेंगी। कटु वचन बोलने से बचें। अगर शिक्षारत हैं तो पढ़ाई में मन लगायें, वर्ना शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ हो सकता है। आप में अंतर्ज्ञान शक्ति मौजूद है। परिवार के सदस्यों से उत्तम संबंध बनाए रखने के लिए प्रयास आवश्यक हैं।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता की इच्छाशक्ति दृढ़ होगी और वे लक्ष्य प्राप्त करेंगे। माता के सम्मान में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के खर्चे बढ़ सकते हैं, धनहानि संभव है, उनका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, शिक्षा उत्तम रहेगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, सम्मान बढ़ेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को पहले किये हुए निवेश से लाभ मिलेगा। व्यापारियों को लाभकारी अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं।

नेत्र, पाचनतंत्र और मुख के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, कंबल और सतनजा दान में दें।

अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(21/04/2028 - 22/06/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 29/05/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 21/04/2028 को प्रारंभ होकर 22/06/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपको हर कार्य में सफलता मिलेगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। निवेश से लाभ होगा। नये मित्र बनेंगे जो लाभप्रद होंगे। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। संतान से संबंध मधुर होंगे। कला में रुचि से खुशी मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। कोई मंत्री या पार्षद आदि बन सकते हैं। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी समृद्ध होंगे। आपके पिता का उत्साह उत्तम होगा। माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, पति से धन का लाभ होगा, अध्यात्म में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहन समृद्ध होंगे; विवाह हो सकता है।

आपकी संतान को सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो भागीदार से लाभ होगा, व्यापार में फायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहत सहयोग करेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

नेत्र और कानों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए स्त्रियों के कल्याण की

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

संस्थाओं में दान दें।

अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(22/06/2029 - 27/10/2029)

आपकी मंगल की महादशा 29/05/2023 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 22/06/2029 को प्रारंभ होकर 27/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे, साख उत्तम रहेगी। लोकप्रियता और प्रसिद्धि बढ़ेगी। उच्चपद प्राप्त होगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्रतिस्पर्धियों और शत्रुओं पर विजयी होंगे। धन प्राप्त होगा। घरेलू सुख, भूमि-भवन आदि क्रय का योग है। पैतृक संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है।

जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है, धन का निवेश कर सकते हैं, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। आपके पिता को सरकार से लाभ होगा। माता को व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। भाई-बहनों को अप्रत्याशित लाभ, विरासत या बीमे से धन प्राप्ति के संकेत हैं।

आपकी संतान शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगी, उन्हें परीक्षा में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर वे सेवारत हैं तो औषधि और खाद्य सामग्री से संबंधित कार्यों में सफलता संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद, धन और सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारी निवेश कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली पित्तविकार, थकान आदि संभव हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- मंगल - चन्द्र
(27/10/2029 - 28/05/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 29/05/2023 को प्रारंभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 27/10/2029 को प्रारंभ होकर 28/05/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आपका समय हंसी-खुशी के साथ बीतेगा। आप धन, सुविधाओं और विलास साधनों से युक्त रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। जीवन में उत्थान आएगा; जनता से संपर्क द्वारा धनागम होगा। चंद्र की सप्तम भाव पर दृष्टि के कारण विवाह, समाज में लोकप्रियता और सफलता संभव हैं। व्यापार, साझेदारी और जलीय पदार्थों से लाभ हो सकता है। विवाहित जीवन

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

सुखी रहेगा और विवाह से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे और साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता प्रसन्न रहेंगे, धनलाभ होगा, सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहेंगे। भाई-बहनों को कुछ धन का लाभ होगा, मानसिक संतुष्टि मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपकी माता को कार्यों में प्रशंसा मिलेगी, प्रसन्नता और घरेलू सुख का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में उन्नति करेगी और भाग्यशाली होगी। सेवारत संतान धन कमाएगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं। अप्रत्याशित प्रोन्नति की संभावना है। उच्चाधिकारी सहयोग करेंगे। परामर्शदाताओं को अचल संपत्ति का लाभ होगा जबकि व्यापारीगण खूब धन कमाएंगे, साझेदारों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तनाव से बचने के लिए स्वास्थ्य का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र गायत्री मंत्र के जाप करें।

